अथ चतुर्दशोऽध्यायः

गुणत्रयविभागयोग

(त्रिगुणमयी माया)

श्रीभगवानुवाच।
परं भूयः प्रवक्ष्यामि ज्ञानानां ज्ञानमुत्तमम्।
यज्ज्ञात्वा मुनयः सर्वे परां सिद्धिमितो गताः।।१।।

श्रीभगवान् उवाच=श्रीभगवान् ने कहा; **परम्**=दिव्य; **भूयः**=पुनः; **प्रवक्ष्यामि**=मैं कहूँगा; **ज्ञानानाम्**=सम्पूर्ण ज्ञान में भी; **ज्ञानम् उत्तमम्**=परम ज्ञान को; **यत्**=जिसे; **ज्ञात्वा**=जानकर; **मुनयः**=मुनिजन; **सर्वे**=सब; **पराम्**=दिव्य; **सिद्धिम्**=पूर्णता को; **इतः**=इस संसार से; **गताः**=प्राप्त हुए हैं।

अनुवाद

श्रीभगवान् ने कहा, हे अर्जुन! तेरे लिए सम्पूर्ण ज्ञानों में भी उत्तम परम ज्ञान को फिर कहूँगा, जिसे जानकर सब मुनिजन इस संसार से परम संसिद्धि को प्राप्त हए हैं।।१।।

तात्पर्य

श्रीकृष्ण ने सातवें अध्याय से बारहवें अध्याय तक परमसत्य भगवान् के तत्त्व का विशद वर्णन किया है। अब वे स्वयं अर्जुन को आगे प्रबुद्ध करते हैं। यदि इस